ISSN 0435-1460
UGC Care List No. 25
के.हि.सं. गवेषणा
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
Shobha Kaur

ISSN 0435-1460
यू.जी.सी. केयर लिस्ट नं. 25

के.हि.सं. गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण तथा साहित्य-चिंतन की शोध पत्रिका

अंक-122 : आश्विन-मार्गशीर्ष, 2077/अक्टूबर-दिसंबर, 2020

परामर्श मंडल

प्रो. एम. वेंकटेश्वर
पूर्व प्रोफेसर, हिंदी विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषाएँ
विश्वविद्यालय हैदराबाद 500007
ई-मेल : mannar.venkateshwar9@gmail.com

प्रो. उमाशंकर उपाध्याय
पूर्व प्रोफेसर, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे, महाराष्ट्र
ई-मेल : usupadhyay@gmail.com

प्रो. रामबख्श मिश्र
पूर्व प्रोफेसर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
बनारस, उ.प्र.

प्रो. सुरेश गौतम
पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा 282005

प्रो. कुमुद शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

संरक्षक
श्री अनिल शर्मा 'जोशी'
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई-मेल: vicechairmankhs@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. बीना शर्मा
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल: directorkhs1960@gmail.com

संपादक
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल: drjyotsnar@gmail.com

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा – 282005
दूरभाष : 0562-2530683/684/705

अनुक्रम

संपादकीय/ **डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी**		05-06
आंचलिकता, कथाकार रेणु एवं नवें दशक के आंचलिक उपन्यास	रवि रंजन	07-26
फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में व्यक्त लोक जीवन	प्रफुल्ल कुमार	27-32
नेपाली मुक्ति संग्राम में रेणु की भूमिका	तुलसी छेत्री	33-36
ग्रियर्सन का हिंदी को अवदान	राजेन्द्र प्रसाद सिंघवी	37-42
हिंदी-उर्दू ध्वनि एवं लिपि: एक संक्षिप्त परिचय	सत्येन्द्र कुमार अवस्थी	43-52
हिंदी का 'न': भाषिक प्रयुक्तियों के विविध आयाम-II	आशुतोष शुक्ल	53-63
भारतीय नवजागरण और डॉ. रामविलास शर्मा	मनोज पाण्डेय	64-71
समाजभाषा विज्ञान के नजरिए से 'मुआवज़े'	शोभा कौर	72-80
वैश्विक काव्यांदोलन और शमशेर की कविता	पराग पावन	81-87
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और भारतीयार में विचार साम्य	के. रामनाथन	88-98
पंत के नवचेतनावादी काव्य में नारी सौंदर्य चेतना	चन्द्रकान्त तिवारी	99-111
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाट्य लेखन और स्त्री-अस्मिता	श्रवण कुमार	112-119
'केशर-कस्तूरी'-आर्थिक अभाव एवं अशिक्षा के चक्रव्यूह में फँसी लड़की की मूक चीत्कार	प्रमोद कुमार यादव	120-128
अपने-अपने कोणार्क में नारी मनोविज्ञान	**यमीना टी., शोभना कोक्काडन**	129-135
सुशीला टाकभौरे कृत 'तुम्हें बदलना ही होगा' में दलित चेतना	किल्मा ऐ.के.	136-146
समकालीन परिदृश्य और 'तिरिछ' कहानी	कंचन कुमारी	147-150
आदमीयत की तलाश और बाघ	आकाश वर्मा	151-163
ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित मानवीय मूल्य	नूतन पाण्डेय	164-175
'मुअनजोदड़ो' : अपनी सभ्यता का सबसे बड़ा तीर्थ	स्मृतिरेखा नायक	176-184
इस अंक के लेखक		
सदस्यता फार्म		

समाजभाषा विज्ञान के नज़रिए से 'मुआवज़े'

—शोभा कौर

समाज और भाषा का रिश्ता अन्योन्याश्रित है। भाषा समाज सापेक्ष प्रतीक व्यवस्था है और इस प्रतीक व्यवस्था के मूल में ही सामाजिक तत्व निहित रहते हैं। समाजभाषा विज्ञान, भाषावैज्ञानिक अध्ययन का वह क्षेत्र है जो भाषा और समाज के बीच पाए जाने वाले हर प्रकार के संबंधों का अध्ययन विश्लेषण करता है। वह भाषा की संरचना और प्रयोग के उन सभी पक्षों एवं संदर्भ का अध्ययन करता है जिसका संबंध सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रकार्य के साथ होता है। अत: इसके अध्ययन क्षेत्र के भीतर विभिन्न सामाजिक वर्गों की भाषिक अस्मिता, भाषा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण एवं अभिवृति, भाषा की सामाजिक शैलियाँ, बहुभाषिकता का सामाजिक आधार नियोजन आदि भाषा अध्ययन के सभी संदर्भ आ जाते हैं, जिनका संबंध सामाजिक संस्थान से रहता है।[1]

समाजभाषा विज्ञान के नज़रिये से भीष्म साहनी के नाटक 'मुआवजे' का अध्ययन एक रोचक विषय है। कारण यह कि नाटक की भाषा साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न होती है और उसमें जीवंतता का अहसास अधिक होता है। रोजमर्रा के जीवन में हम जिस भाषा का इस्तेमाल करते हैं उस और इतना ध्यान नहीं देते लेकिन जैसे ही वह नाटक के पात्र बोलने लगते हैं; उसे पढ़ या सुन कर हम पर अलग तरह का अहसास होता है। स्वयं भीष्म सहनी जैसे भाषा शिल्पी ने जो कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में उतनी ही शिद्दत के साथ लेखन करते थे उन्होंने भी नाटक को चुना। वे बताते हैं कि, "नाटक की दुनिया बड़ी आकर्षक और निराली है, जिस तरह धीरे धीरे एक नाटक रूप लेता है और रूप लेने पर एक नए संसार की जैसी सृष्टि हो जाती है, वह अनुभव बड़ा ही सुखद और रोमांचकारी होता है - अभिनेताओं के लिए अपनी आस पास की कारोबारी दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं होता, उसके लिए अस्तित्व होता है नाटक की दुनिया का, जो महीने-दो-महीने में अस्तित्व में आएगी और आँख झपकते ही फिर टूट फूट जाएगी। वर्षों बाद भी वह दुनिया मुझे बड़ी हृदयग्राही लगी और मन चाहा कि सब काम छोड़ कर फिर नाटक लिखूँ।"[2]